

**कँवल** पुं. (तद्.) 'कमल'।

**कँवलघट** पुं. (तद्.) कमलगट्टे का छत्ता उदा. विहंसहि हँसहिं कँवलघट तोरहिं -मृगावती-कुतुबन।

**कँवलाकंत** पुं. (तद्.) कमलाकांत, लक्ष्मी के पति, विष्णु, ईश्वर उदा. जहाँ पउड़े श्री कँवला कंत-कबीर।

**कँवा** पुं. (देश.) मुर्गी से कुछ बड़े तथा बतख से कुछ छोटे आकार का जलबोदरी पक्षी उदा. "गुडरु कँवा खचियन भरे"- चंदायन- दाऊद 154/1।

**कँवासा** पुं. (देश.) पुत्री के पुत्र का बेटा अर्थात् पुत्री का पौत्र, परनाती।

**ककहरा** पुं. (देश.) 1. क से ह तक वर्णमाला 2. बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए एक विशेष प्रकार की कविता उदा. क का कमल किरन में पावे, ख खा चाहै खोरि मनावै।

**ककार** पुं. (तत्.) 'क' अक्षर या उसकी ध्वनि।

**कक्षा** पुं. (तत्.) 1. काँख, बगल 2. कछार, कच्छ 3. जंगल 4. सूखी घास 5. कमरा 6. आंगन 7. धोती का छोर।

**कक्षा** स्त्री. (तत्.) 1. श्रेणी 2. परिधि 3. ग्रह के परिभ्रमण का मार्ग 4. देहली 5. काँछ 6. एक तौल, रत्ती 8. कमर 9. कटिबंध 10. प्राचीर 11. करधनी।

**कगार** पुं. (देश.) 1. नदी का ऊँचा किनारा 2. ऊँचा और ढलवाँ टीला।

**कच** पुं. (तत्.) 1. बाल (सिर का) 2. पपड़ी 3. झुंड 4. बादल 5. बृहस्पति का पुत्र 6. सुगंधवाला।

**कचकच** पुं. (अनु.) वाग्युद्ध, बकवाद।

**कचकचाना** अ.क्रि. (देश.) दे. किचकिचाना।

**कचनार** पुं. (तद्.) पतली-पतली डालियों वाला एक छोटा पेड़, इसकी कली की सब्जी बनती है, लेग्यूमिनोसी कुल का पादप 'बहूनिया बैरिगेटा लिन', इसकी छाल तथा पुष्प रक्त पित्त, रक्त प्रदर आदि रोगों के लिए लाभकारी हैं।

**कचपच** पुं. (देश.) थोड़े सी जगह में बहुत चीजों या लोगों का भर जाना, गिचपिच।

**कचरकचर** पुं. (देश.) मूली, गाजर आदि कच्चा भोजन करने पर निकलने वाली आवाज।

**कचरा** पुं. (देश.) कूड़ा-करकट (लाक्ष.अर्थ.) निकृष्ट, अनुपयोगी वस्तु।

**कचरी** स्त्री. (देश.) 1. ककड़ी जाति की एक बेल, पेहँटा, पेहँटुल 2. सब्जियों के पतले-पतले टुकड़े और उनकी सब्जी 3. चावल से बनी सूखी सेव।

**कचहरी** स्त्री. (तद्.) 1. न्यायालय 2. दरबार 3. गोष्ठी मुहा. कचहरी चढ़ना-अदालत तक मामला ले जाना।

**कचालू** पुं. (देश.) एक कंदीय जड़ वाला एक पौधा जिसकी कंद तरकारी या चाट के रूप में खाई जाती है; टैरो, बंडा, अरबी, घुंड़यां

**कचूमर** पुं. (देश.) कुचल कर बनाई गई वस्तु 2. अचार 3. मसौदा मुहा. कचूमर करना या निकालना 1. खूब कूटना पीटना, चूर चूर करना 3. नष्ट करना।

**कचोट** स्त्री. (देश.) रह रहकर बार बार होनेवाली वेदना, भीतरी पीड़ा, चुभन।

**कचोटना** अ.क्रि. (देश.) 1. किसी की याद में दुःखी होना 2. कोई बात मन में चुभना 3. मानसिक पीड़ा होना।

**कचौड़ी (कचौरी)** स्त्री. (देश.) दाल आदि की पीठी से भरी पूरी।

**कच्चा** वि. (तद्.) 1. बिना पका हुआ, अपक्व 2. अपरिष्कृत।

**कच्चा घड़ा** पुं. (तद्.) वह घड़ा जिसे पकाया न गया हो (लाक्ष.) फिलहाल संस्कार हीन (बालक)।

**कच्चा चिट्ठा** पुं. (देश.) 1. गुप्त वृत्तांत, व्यक्तिगत जीवन के रहस्य मुहा. कच्चा चिट्ठा खोलना- गुप्त बातें बता देना 2. बाणि. तलपट, अंतिम खाता बनाने से पहले का लेखा। trial balance